एकात्म भारत संस्थान
के लिए सुचेंद्र मिश्रा द्वारा

एकात्म भारत

@EkatmaBharat
दैनिक एकात्म भारत

जो एकात्म है वही भारत है

भाद्रपद, कृष्ण पक्ष अष्टमी
रविवार विक्रम संवत् 2076

22 सितंबर 2019, इंदौर
e-paper : www.ekatmabharat.com

10 नवंबर से मनेगी स्व. दत्तोपंत जी ठेंगड़ी की जन्मशताब्दी

दिल्ली

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ अब भारतीय किसान संघ, भारतीय मजदूर संघ और स्वदेशी जागरण मंच के संस्थापक दत्तोपंत ठेंगड़ी की जन्मशताब्दी मनाने की तैयारी कर रहा है। दत्तोपंत ठेगड़ी की जन्मशताब्दी के कार्यक्रम 10 नवंबर से शुरू होगी और अगले साल 10 नवंबर तक चलेंगे।

संघ के एक नेता के मुताबिक इसकी शुरूआत नागपुर में संघ मुख्यालय से होगी जहां संघ प्रमुख मोहन भागवत इसकी शुरुआत करेंगे। अगले साल 10 नवंबर को दिल्ली में कार्यक्रमों का समापन होगा। जन्मशताब्दी कार्यक्रम के लिए राष्ट्रीय स्तर पर और प्रांत स्तर पर समितियां बनाई गई हैं।संघ नेता के मुताबिक कार्यक्रमों के जरिए बताया जाएगा कि दत्तोपंत ठेगड़ी की यह सोच थी कि समाज के अंतिम व्यक्ति तक लाभ पहुंचे, सबको रोजगार मिले, सबको सुविधाएं मिलें। स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सह संयोजक अश्विनी महाजन ने कहा कि 30 सालों से विकास की सोच बस जीडीपी बढ़ाने पर रही न कि आम आदमी को कितना लाभ मिल रहा है इस पर रही। गैरबराबरी भी बढ़ रही है और 30 सालों में बेरोजगारी भी कम नहीं हुई है। जबकि दत्तोपंत ठेगड़ी का जो विकास का मॉडल था वह महज जीडीपी पर आधारित नहीं बल्कि सबका भला, सबको रोजगार का था। महाजन ने कहा कि जन्मशताब्दी कार्यक्रम के जरिए हम उनकी सोच और विकास के मॉडल को सामने रखेंगे। यह एक वैचारिक प्रबोधन होगा।

कश्मीर में आजादी मांगने वाले बांड भरकर छूटे

श्रीनगर

कश्मीर की आजादी की मांग करने वाले अलगावावादी नेताओं कअनुच्छेद 370, 35ए हटने के पश्चात अपनी हैसियत का अंदाजा हो गया है। जम्मू कश्मीर में नजरबंद मीरवाइज, नेकां के दो पूर्व विधायकों और पीडीपी नेता समेत पांच ने छूटने के लिए बॉन्ड भरा है कि रिहाई के बाद ऐसा कोई काम नहीं करेंगे, जिससे कानून व्यवस्था बिगड़े या जनभावनाएं भड़कें। पीपुल्स कांफ्रेंस के महासचिव एवं पूर्व मंत्री इमरान रजा अंसारी के साथ नेशनल कांफ्रेंस के पूर्व विधायक मोहम्मद सईद आखून और पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी के एमएलसी खुर्शीद आलम शुक्रवार को हिरासत से छूट गए हैं। तीनों नेताओं ने बॉन्ड भरा है। हालांकि बॉन्ड भरे जाने की आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है।संबंधित अधिकारियों ने बताया कि नेशनल कांफ्रेंस के पूर्व विधायक मोहम्मद सईद आखून को उनके स्वास्थ्य के आधार पर रिहा किया गया है, जबकि पीडीपी नेता एमएलसी खुर्शीद आलम को उनके भाई की मौत के मद्देनजर छोड़ा गया है। पीडीपी छोड़ पीपुल्स कांफ्रेंस में शामिल होने वाले पूर्व मंत्री इमरान रजा अंसारी को मुहर्रम से पहले ही प्रशासन ने सेंतूर उप जेल से उनके घर में स्थानांतरित कर नजरबंद कर दिया था। शुक्रवार वह भी दिल्ली रवाना हो गए। वह अपने उपचार के लिए दिल्ली गए हैं। उन्हें भी उनके स्वास्थ्य के आधार पर ही प्रशासन ने रिहा किया है।सूत्रों ने बताया कि उदारवादी हुर्रियत चेयरमैन मीरवाइज मौलवी उमर फारूक, नेशनल कांफ्रेंस के दो पूर्व विधायकों, पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी और पीपुल्स कांफ्रेंस से जुड़े दो नेताओं ने राज्य प्रशासन को बॉन्ड लिखकर दिया है कि वह अपनी रिहाई के बाद कोई ऐसा काम नहीं करेंगे, जिससे माहौल बिगड़े।

अयोध्या मामले में भाजपा नेता व पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह को समन

एकात्म भारत. नई दिल्ली

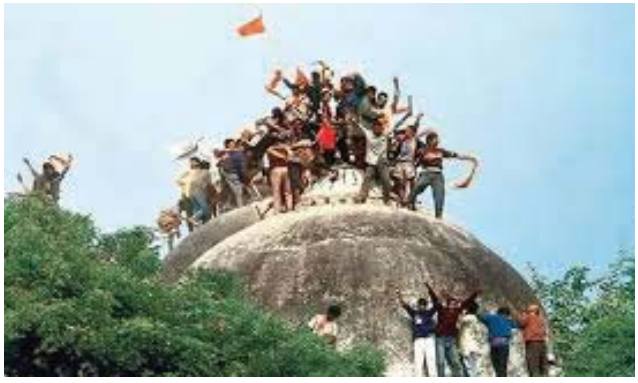

अयोध्या के विवादित ढांचा को ढहाए जाने के आपराधिक मामले में सीबीआई की विशेष अदालत (अयोध्या प्रकरण) ने उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ भाजपा नेता कल्याण सिंह को समन जारी कर 27 सितंबर को उपस्थित होने को कहा है। विशेष न्यायाधीश सुरेंद्र कुमार यादव ने बार के सदस्यों की सूचना पर स्वतः संज्ञान लेते हुए यह आदेश जारी किया है। बार के सदस्यों का कहना था कि कल्याण सिंह अब राज्यपाल पद से सेवानिवृत हो चुके है।

बीते नौ सितंबर को सीबाआई ने विशेष अदालत से इस मामले में कल्याण सिंह को बुलाने की मांग की थी। सीबीआई ने कहा था कि कल्याण सिंह अब संवैधानिक पद पर नहीं हैं, लिहाजा उन्हें इस मामले में बतौर आरोपी समन जारी किया जाए। इस मामले में उनके खिलाफ भी आरोप पत्र दाखिल है। लेकिन राज्यपाल होने के नाते उन पर आरोप तय नहीं हो सका था। तब विशेष अदालत ने सीबीआई से इस संदर्भ में प्रमाणित तथ्य प्रस्तुत करने को कहा था। 11 सितंबर को सीबीआई प्रमाणित तथ्य दाखिल नहीं कर सकी। उसने कहा कि अभी उसे इस संदर्भ में मुख्यालय से कोई लिखित सूचना प्राप्त नहीं हुयी है, लिहाजा उसे समय दिया जाए।

16 सितंबर को भी सीबीआई प्रमाणित तथ्य दाखिल करने मे असफल रही। साथ ही विशेष अदालत से एक बार फिर से समय की मांग की। 21 सितंबर को भी सीबीआई ने समय देने की मांग की। 30 मई, 2017 को इस आपराधिक मामले में सीबीआई की विशेष अदालत (अयोध्या प्रकरण) ने लालकृष्ण आडवाणी, मुरली मनोहर जोशी, उमा भारती, विनय कटियार व विष्णु हरि डालमिया पर आईपीसी की धारा 120 बी (साजिश रचने) के तहत आरोप तय किया था। इसके बाद मामले में सुनवाई शुरू हो गयी।

राज्यपाल होने के नाते कल्याण सिंह के खिलाफ आरोप तय नहीं हो सका था। सीबीआई ने जांच के बाद इस मामले में कुल 49 आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था जिनमें 16 आरोपियों की मौत हो चुकी है। अब इस मामले में 32 आरोपियों के खिलाफ दिन-प्रतिदिन सुनवाई हो रही है। अभियोजन की ओर से अब तक करीब 336 गवाह पेश किए जा चुके हैं। 19 अप्रैल, 2017 को उच्चतम न्यायालय ने एक आदेश जारी कर इस मामले की सुनवाई दो साल में पुरा करने का आदेश दिया था। हालाकि अभी हाल ही में न्यायालय ने यह अवधि नौ माह के लिए बढ़ा दी है। छह दिसंबर, 1992 को विवादित ढांचा ढहाए जाने के मामले में कुल 49 एफआईआर दर्ज हुए थे।

हमें प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा

प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण शिविर में
किसानों से बोले पद्मश्री सुभाष पालेकर
एकात्म भारत. मेरठ

चौधरी चरणसिंह विश्वविद्यालय के नेताजी सुभाष सभागार में लोक भारती मेरठ क्षेत्र के प्राकृतिक कृषि प्रशिक्षण शिविर में मेरठ-सहारनपुर मंडल से आए किसानों से पद्मश्री सुभाष पालेकर जी ने प्रकृति के माध्यम से ही खेती करने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि प्रकृति ने पेड़-पौधों के भोजन और पानी के लिये पूरी व्यवस्था की है, हमने ही उसे नष्ट किया है। हमें बताया गया कि बिना कीटनाशक और रासायनिक खाद के खेती हो ही नहीं सकती। खेत में जितना खाद और कीटनाशक डालोगे, उत्पादन उतना ही अधिक मिलेगा, लेकिन यह झूठ निकला। इस झूठ ने खेती की लागत बढ़ा दी। उत्पादन घट रहा है. खेती की लागत नहीं निकल रही। मौसम की मार झेलने में ये फसलें विफल हैं। नतीजा यह है कि किसान आत्महत्या कर रहे हैं।उन्होंने कहा कि इस वक्त जैविक खाद आधारित खेती करना भी असम्भव है। आखिर इतनी जैविक खाद (गोबर से निर्मित) आएगी कहां से। समय की आवश्यकता है कि किसानों को प्राकृतिक खेती की ओर लौटना होगा। यही उनकी समस्त समस्याओं का समाधान है। यही तरीका खेती की लागत शून्य करते हुए आय दोगुनी कर सकता है।

उन्होंने कहा कि पृथ्वी पर प्रकृति का एक पूरा तंत्र है। इस धरती पर प्रकृति पहले आई और इंसान लाखों साल बाद। तब कोई खाद या कीटनाशक नहीं था। आप जंगल में देखें, वहां पौधों को कौन खाद-पानी और कीटनाशक देता है। फलों से लदे रहते हैं, इन पौधों का पत्ता कहीं से भी तोड़कर दुनिया के किसी भी लैब में टेस्ट करा लीजिये, पोषक तत्वों की कमी नहीं मिलेगी। ऐसा क्यों है? क्योंकि इनका संरक्षण, संवर्धन प्रकृति करती है। हमें इसी तंत्र को समझना होगा।

एकात्म विचार

जो सत्य है, उसे साहसपूर्वक निर्भीक होकर लोगों से कहो–उससे किसी को कष्ट होता है या नहीं, इस ओर ध्यान मत दो। दुर्बलता को कभी प्रश्रय मत दो। सत्य की ज्योति 'बुद्धिमान' मनुष्यों के लिए यदि अत्यधिक मात्रा में प्रखर प्रतीत होती है, और उन्हें बहा ले जाती है, तो ले जाने दो–वे जितना शीघ्र बह जाएँ उतना अच्छा ही है।

स्वामी विवेकानंद

मधुरवाणी के धनी देव्रवत सिंहजी 22 सितम्बर जन्मदिवस

'देबू दा' के नाम से प्रसिद्ध देबव्रत सिंह जी का जन्म 22 सितम्बर, 1929 को बंगाल के दीनाजपुर में हुआ था. आजकल यह क्षेत्र बांग्लादेश में है। मुर्शिदाबाद जिले के बहरामपुर में उनका पैतृक निवास था। भवानी चरण सिंह जी उनके पिता तथा वीणापाणि देवी जी उनकी माता थीं। चार भाई और तीन बहनों वाले परिवार में देबू दा सबसे बड़े थे। उनकी शिक्षा अपने पैतृक गांव बहरामपुर में ही हुई। पढ़ने में वे बहुत अच्छे थे। मैट्रिक की परीक्षा में अच्छे अंक लाने के कारण उन्हें छात्रवृत्ति भी मिली थी। बंगाल में श्री शारदा मठ का व्यापक प्रभाव है। यह परिवार भी परम्परागत रूप से उससे जुड़ा था। अतः घर में सदा अध्यात्म का वातावरण बना रहता था। उनकी तीनों बहनें मठ की शरणागत होकर संन्यासी बनीं। देबू दा भी वहां से दीक्षित थे। यद्यपि वे और उनके छोटे भाई सत्यव्रत सिंह प्रचारक बने। देबू दा छात्र जीवन में ही स्वयंसेवक बन गये थे। बाल और शिशुओं को खेल खिलाने में उन्हें बहुत आनंद आता था। उनका यह स्वभाव जीवन भर बना रहा। अतः लोग उन्हें 'छेले घोरा' (बच्चों को घेरने वाला) कहते थे। संघ पर प्रतिबंध के विरोध में सन् 1949 में सत्याग्रह कर वे जेल गये. इसके बाद उन्होंने कुछ समय सरकारी नौकरी की। शिक्षानुरागी होने के कारण इसी दौरान उन्होंने होम्योपैथी की पढ़ाई करते हुए डीएमएस की उपाधि भी प्राप्त कर ली। उन दिनों शाखा में एक गीत गाया जाता था, जो देबू दा को बहुत प्रिय था। इसमें देशसेवा के पथिकों को सावधान किया जाता था कि इस मार्ग पर स्वप्न में भी सुख नहीं है। यहां तो केवल दुख ही दुख है। अपने पास यदि कुछ धन-दौलत है, तो उसे भी देश के लिए ही अर्पण करना है। इस गीत से प्रभावित होकर उन्होंने नौकरी छोड़ दी और प्रचारक बन गये।

सर्वप्रथम उन्हें आसनसोल जिले में भेजा गया। क्रमशः उनका कार्यक्षेत्र बढ़ता गया और वे उत्तर बंगाल के संभाग प्रचारक बने। देबू दा से भेंट और उनकी प्यार भरी मधुर वाणी से प्रचारक और विस्तारकों की आधी समस्याएं स्वतः हल हो जाती थीं। आपातकाल में वे पुलिस की निगाह में आ गये और जेल भेज दिये गये। वे बहुत कम खाते और कम ही बोलते थे। बंगाल में 'विद्या भारती' का काम प्रारम्भ करने तथा कई नये विद्यालय खोलने का श्रेय उन्हें ही है। सन् 1992 में भारत सरकार ने 'तीन बीघा क्षेत्र' बंगलादेश को देने का निर्णय किया। बंगाल की जनता इसके घोर विरुद्ध थी। अतः भारतीय जनता पार्टी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद जैसी कई देशभक्त संस्थाओं ने 'सीमांत शांति सुरक्षा समिति' बनाकर देबू दा के नेतृत्व में इसके विरुद्ध जनांदोलन किया। 25 जून, 1992 को आडवानी जी भी इस आंदोलन में शामिल हुए।

इस आंदोलन में देबू दा की समन्वयकारी प्रतिभा तथा नेतृत्व की क्षमता प्रगट हुई। वे इसमें गिरफ्तार भी हुए थे। सन् 1993 में उन्हें बंगाल में भारतीय जनता पार्टी का संगठन मंत्री बनाया गया। इस दायित्व पर वे 2003 तक रहे गुणग्राही देबू दा कला, साहित्य और संस्कृति के प्रेमी थे। वे 'अवसर' नामक पत्रिका के संचालक सदस्य थे। व्यस्तता के बीच भी वे प्रतिदिन ध्यान एवं पूजा अवश्य करते थे। वृद्धावस्था में वे सिलीगुड़ी के संघ कार्यालय (माधव भवन) में रहते थे। 13 अप्रैल को मस्तिष्काघात के बाद उन्हें चिकित्सालय ले जाया गया, जहां 26 अप्रैल, 2013 को उनका देहांत हुआ। देबू दा ने काफी समय तक बंगाल के प्रांत प्रचारक वसंतराव भट्ट जी के निर्देशन में काम किया था। यह भी एक संयोग है कि उसी दिन प्रातः कोलकाता के संघ कार्यालय पर वसंतराव जी ने भी अंतिम सांस ली थी।

विश्व संवाद केंद्र से साभार

मंदी नहीं मंदी के माहौल से बचें

लेखक श्याम दांगी वरिष्ट अधिवक्ता और राष्ट्रवादी कार्यकर्ता हैं।

मेरे मित्र ने जुलाई के महीने में नई कार खरीदी है। लगभग सवा आठ लाख रुपए की इस कार के लिए उन्होंने तीन लाख रुपए का लोन भी लिया है। कुछ दिन पहले जब मैंने उनसे देश में छाई हुई मंदी की बातों के बारे में चर्चा की तो वे कहने लगे, हां यार यदि मुझे जुलाई में पता होता कि मंदी आ रही है तो मैं कार कभी नहीं खरीदता। मंदी के माहौल में पता नहीं कब नौकरी चली जाए और ऊपर से कार की किस्तें। बहुत डर लग रहा है।

हालांकि मेरे मित्र को इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी कि मंदी कैसे आती है और अगर आ जाती है तो फिर जाती कैसे हैं। उससे बात करके मुझे लगा कि **दुर्घटना की तुलना में दुर्घटना का विवरण ज्यादा विभत्स से होता है।** ऐसा ही कुछ हमारे देश की अर्थव्यवस्था के साथ भी हो रहा है। इसे लेकर राजनीतिक आधार पर दो पक्ष बन गए हैं। एक का यह मानना है कि देश अब तक की भीषण मंदी झेल रहा है। वे इस मंदी की तुलना विश्व युद्ध के बाद की महामंदी से करते हैं। वहीं दूसरा पक्ष इन्हें पूरी तरह से गलत बताते हुए आर्थिक सुस्ती को स्वीकार करता है लेकिन मंदी से इनकार करता है।

अभी कल ही केंद्र सरकार ने कारपोरेट टैक्स में ऐतिहासिक राहत दी। इससे शेयर मार्केट में तेजी आ गई और वही मंदी समर्थकों के मुंह पर भी मुस्कुराहट आ गई। उन्होंने कहा देखो, कहा था ना भीषण मंदी है। इसी के चलते टैक्स कम किया गया है। तो वही मंदी विरोधियों का कहना था यह उपाय अर्थव्यवस्था की तत्कालिक सुस्ती को दूर करेगा और देखिए दिसंबर तक अर्थव्यवस्था फिर से बुलेट ट्रेन की तरह भागने लगेगी। मेरा प्रश्न अब भी वहीं था कि मंदी आती कैसे है और आती है तो जाती कैसे है? अब तक मंदी के समर्थक और मंदी के विरोधी मुझे इस बात का उत्तर नहीं दे पाए हैं। मंदी समर्थक यह कहते हैं कि मंदी आती है तो जीडीपी कम हो जाती है इससे बेरोजगारी बढ़ जाती है और बाजार से ग्राहक गायब हो जाते हैं। मैंने पूछा कि फिर इतनी भयावह स्थिति पुनः सामान्य कैसे होती है? वो कौनसी जादू की छड़ी होती है जिसके चलते जीडीपी बढ़ जाती है, बेरोजगारी घट जाती है और बाजार ग्राहकों से पट जाता है? लेकिन मुझे इस बात का उत्तर नहीं मिला।

मैं मूल रूप से किसान हूं। और विगत सात-आठ वर्षों से देख रहा हूं कि खेतों में काम करने के लिए अब मजदूर आसानी से नहीं मिलते। ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादातर युवा नगरीय क्षेत्रों में उद्योग,मॉल आदि में नौकरी करने जाते हैं। वे खेत में काम करना पसंद नहीं करते। यदि युवा पढ़ा लिखा ना हो, तो भी वह शहरी क्षेत्र में निर्माण कार्य में लग जाता है या फिर फैक्ट्री में श्रमिक के रूप में कार्य करने लगता है। मैं जानना चाहता हूं कि यदि फैक्ट्रियों में शिफ्ट में बंद की गई हैं और श्रमिकों को निकाल दिया गया है तो भी खेती किसानी में काम करने वाले मजदूर अब भी क्यों नहीं मिल रहे हैं? क्या यह संभव है कि भीषण मंदी में एक श्रमिक बेरोजगार रहे और फिर भी अपने गांव ना लौटे या खेत में काम करना नापसंद करे?

एक बात और जानना चाहता हूं यह क्या आर्थिक मंदी आएगी तो इस देश के सवा सौ करोड़ लोग प्रतिदिन सुबह मंजन करना बंद कर देंगे या साबुन से नहाना बंद कर देंगे? मैं यह इसलिए पूछ रहा हूं क्योंकि किराने का सामान बेचने वाला आदमी भी मंदी की बात करता है। क्या मंदी आएगी तो सवा सौ करोड़ लोग एक समय खाना खाना शुरु कर देंगे? ठीक वैसा ही है जैसे कि जीएसटी के आने पर अंडे का ठेला लगाने वाला भी ठंड में अंडे का भावएक रुपए का बढ़ाने पर जीएसटी लागू होने का हवाला देता था।

कुल मिलाकर बात माहौल की है और माहौल एक तरह की भेड़ चाल है। आप जिस तरह के लोगों के संपर्क में ज्यादा होंगे आप उसे उस तरह से लेंगे। मंदी का डर दिखाकर शोषण करने वाले मालिक अपने मजदूरों को इंक्रीमेंट देने से मना कर देंगे, उन्हें बोनस नहीं दिया जाएगा। हो सकता है कि नौकरी से निकालने की धमकी भी दे दी जाए। यही वह प्रभाव है जो मंदी का माहौल लाएगा भले ही मंदी आए या ना आए। ये माहौल कई लोगों का जीवन बर्बाद कर सकता है। इसलिए मुझे लगता है कि हमें मंदीसे ज्यादा मंदी के माहौल से बचने की आवश्यकता है।

जानिए क्या हैं वेद और उपनिषद

हिंदुत्व की बात करने वाले अधिकतर हिन्दुओं के पास अपने ही धर्मग्रंथ की सही जानकारी नहीं है। इसका कारण यह है कि उन्हें इनको पढ़ने का समय ही नहीं है। वे वेद को दुनिया के ज्ञान का स्रोत तो मानते हैं लेकिन कभी इन्हें पढ़ने के बारे में सोचते भी नहीं हैं। ये छोड़िए वे ये भी नहीं जानते हैं कि वेद, उपनिषद, वेदांत आदि में क्या है और किसका किससे क्या संबंध है?

अधिकांश हिंदुओं ने तो गीता भी नहीं पढ़ी है जबकि गीता पढ़ने में कोई बहुत अधिक समय नहीं लगता है। हां हमारे आसपास कई धार्मिक आयोजन नियमित रुप से होते हैं और हम उनमें सम्मिलित भी होते हैं लेकिन जानकारी के मामले में हम बहुत पीछे हैं। आपको यह जानकारी होना चाहिए कि पुराण, रामायण और महाभारत हिन्दुओं के धर्मग्रंथ नहीं हैं, धर्मग्रंथ तो वेद ही हैं।

शास्त्रों को 2 भागों में बांटा गया है- श्रुति और स्मृति। श्रुति के अंतर्गत धर्मग्रंथ वेद आते हैं और स्मृति के अंतर्गत इतिहास और वेदों की व्याख्या की पुस्तकें पुराण, महाभारत, रामायण, स्मृतियां आदि आते हैं। हिन्दुओं के धर्मग्रंथ तो वेद ही हैं। वेदों का सार उपनिषद है और उपनिषदों का सार गीता है। आइए जानते हैं कि वेदों में क्या है?

वेदों में ब्रह्म (ईश्वर), देवता, ब्रह्मांड, ज्योतिष, गणित, रसायन, औषधि, प्रकृति, खगोल, भूगोल, धार्मिक नियम, इतिहास, संस्कार, रीति-रिवाज आदि लगभग सभी विषयों से संबंधित ज्ञान भरा पड़ा है। वेद 4 हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। ऋग्वेद का आयुर्वेद, यजुर्वेद का धनुर्वेद, सामवेद का गंधर्व वेद और अथर्ववेद का स्थापत्य वेद ये क्रमशः चारों वेदों के उपवेद बतलाए गए हैं।

ऋग्वेद : ऋक अर्थात स्थिति और ज्ञान। इसमें भौगोलिक स्थिति और देवताओं के आवाहन के मंत्रों के साथ बहुत कुछ है। ऋग्वेद की ऋचाओं में देवताओं की प्रार्थना, स्तुतियां और देवलोक में उनकी स्थिति का वर्णन है। इसमें जल चिकित्सा, वायु चिकित्सा, सौर चिकित्सा, मानस चिकित्सा और हवन द्वारा चिकित्सा आदि की भी जानकारी मिलती है।

यजुर्वेद : यजु अर्थात गतिशील आकाश एवं कर्म। यजुर्वेद में यज्ञ की विधियां और यज्ञों में प्रयोग किए जाने वाले मंत्र हैं। यज्ञ के अलावा तत्वज्ञान का वर्णन है। तत्वज्ञान अर्थात रहस्यमयी ज्ञान। ब्रम्हांड, आत्मा, ईश्वर और पदार्थ का ज्ञान। इस वेद की 2 शाखाएं हैं- शुक्ल और कृष्ण।

सामवेद : साम का अर्थ रूपांतरण और संगीत। सौम्यता और उपासना। इस वेद में ऋग्वेद की ऋचाओं का संगीतमय रूप है। इसमें सविता, अग्नि और इन्द्र देवताओं के बारे में जिक्र मिलता है। इसी से शास्त्रीय संगीत और नृत्य का जिक्र भी मिलता है। इस वेद को संगीत शास्त्र का मूल माना जाता है। इसमें संगीत के विज्ञान और मनोविज्ञान का वर्णन भी मिलता है।

अथर्ववेद : थर्व का अर्थ है कंपन और अथर्व का अर्थ अकंपन। इस वेद में रहस्यमयी विद्याओं, जड़ी-बूटियों, चमत्कार और आयुर्वेद आदि का जिक्र है। इसमें भारतीय परंपरा और ज्योतिष का ज्ञान भी मिलता है।

उपनिषद क्या है?

उपनिषद वेदों का सार है। सार अर्थात निचोड़ या संक्षिप्त। उपनिषद भारतीय आध्यात्मिक चिंतन के मूल आधार हैं, भारतीय आध्यात्मिक दर्शन के स्रोत हैं। ईश्वर है या नहीं, आत्मा है या नहीं, ब्रह्मांड कैसा है आदि सभी गंभीर, तत्वज्ञान, योग, ध्यान, समाधि, मोक्ष आदि की बातें उपनिषद में मिलेंगी। उपनिषदों को प्रत्येक हिन्दू को पढ़ना चाहिए। इन्हें पढ़ने से ईश्वर, आत्मा, मोक्ष और जगत के बारे में सच्चा ज्ञान मिलता है।

वेदों के अंतिम भाग होने के कारण उपनिषद को 'वेदांत' भी कहते हैं। उपनिषद में तत्वज्ञान की चर्चा है। उपनिषदों की संख्या वैसे तो 108 है, परंतु मुख्य 12 माने गए हैं, जैसे- 1. ईश, 2. केन, 3. कठ, 4. प्रश्न, 5. मुण्डक, 6. माण्डूक्य, 7. तैत्तिरीय, 8. ऐतरेय, 9. छांदोग्य, 10. बृहदारण्यक, 11. कौषीतकि और 12. श्वेताश्वतर।

क्रमशः..